भक्ति आंदोलन

- डॉ. नवीन नन्दवाना

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज) 313001

fppt.com

भक्ति आंदोलन

- जब कोई विचार या संकल्पना किसी क्षेत्र विशेष या समुदाय विशेष के कुछ लोगों तक सीमित न रहकर जनसाधारण और व्यापक क्षेत्र तक प्रचारित-प्रसारित हो जाए तब उसे आंदोलन की संज्ञा दी जा सकती है।
- मध्यकाल में भी यह भक्ति एक आंदोलन के रूप में उभरी। यह किसी क्षेत्र या व्यक्ति तक सीमित न रहकर देश के समस्त भू-भागों, प्रांतों एवं जाति-समुदायों के माध्यम से फैली अतः इसे भक्ति-आंदोलन के नाम से जाना गया।

fppt.com

भक्ति-आन्दोलन के सूत्रपात के विषय में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का मत है कि-

- ''हिंदू धर्म इस्लाम के संपर्क से मात्र व्यक्तिगत साधना का केन्द्र न रहकर सामूहिक साधना का रूप धारण करने लगा था और उसमें आंदोलनकारी प्रवृत्तियाँ उभरने लगी थीं। प्रायः सभी धर्मों में युगानुरूप परिस्थिति के अनुसार पंथों, संप्रदायों और उपसंप्रदायों की सृष्टि होने लगी, जिसका मुख्य उद्देश्य आत्म निरीक्षण और परिस्थिति परीक्षण द्वारा आवश्यक सुधार करके परंपरागत आचार-विचारों को किसी-न-किसी रूप में प्रश्रय दे कर उन्हें जीवित रखना था। इस प्रयास में वैष्णव धर्म ने भागवत संप्रदाय के रूप में नेतृत्व किया और व्यापक प्रभाव डाला, जिसके माध्यम से भक्ति-आन्दोलन का सूत्रपात हुआ।''

fppt.com

भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप

- इस दौर में भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप दिखाई पड़ा। भारतीय वैष्णव धर्म में भक्ति की प्रधानता थी। इनमें आत्मा-परमात्मा के संबंधों को लेकर द्वैत, अद्वैत, द्वैताद्वैत, शुद्धाद्वैत और विशिष्टाद्वैत आदि के आधार पर दार्शनिक चिंतन हुए।
- इसी प्रकार इस्लाम में शरा और बेशरा, श्रमण धर्मों में बौद्ध व जैन धर्मों में भी उप संप्रदाय जैसे मंत्रयान, वज्रयान, सहजयान आदि का जन्म हुआ। शैवों में भी कश्मीरी, लिंगायत, पाशुपत एवं वीर आदि तथा शाक्तों में वाममार्गी व दक्षिणमार्गी जैसे उप विभाजन हुए।

fppt.com

कई संप्रदायों का जन्म

- यह सब कुछ भक्ति-आंदोलन के प्रभाव से हुआ। देश के अलग-अलग भागों में और कई संप्रदायों का जन्म हुआ। परशुराम चतुर्वेदी का मानना है कि- "केरल का शास्तापूजक संप्रदाय, बंगाल के धर्म-ठाकुर, सहजिया, बाउल, सत्यपीर और कर्ताभाजा आदि सम्प्रदाय, उड़ीसा का पंचसखा संप्रदाय महाराष्ट्र के वारकरी और महानुभाव-सम्प्रदाय भक्ति आंदोलन की ही उपज हैं।"
- इनके अतिरिक्त गुजरात में नरसी मेहता और राजस्थान में मीरा बाई ने भक्ति का बिगुल बजाया। इस प्रकार भक्ति, आंदोलन का स्वरूप धारण कर देश भर में फैल गई। विभिन्न परिस्थितियों ने भी भक्ति आंदोलन के उद्भव में सहायता की।

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने इतिहास ग्रंथ में लिखते हैं कि- ‘‘देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए अवकाश न रह गया। उसके सामने ही देवमंदिर गिराये जाते थे, देवमूर्तियाँ तोड़ी जाती थीं और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ नहीं कर सकते थे। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे । अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान् की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था ?’’

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का मत शुक्ल जी से भिन्न है।** वे कहते हैं कि- ''मुसलमानों के अत्याचार के कारण यदि भक्ति की भाव धारा को उमड़ना था तो पहले उसे सिंध में और फिर उत्तर भारत में प्रकट होना चाहिए था, पर हुई वह दक्षिण में। असल बात यह है कि जिस बात को ग्रियर्सन ने 'अचानक बिजली की चमक के समान फैल जाना' लिखा है वह ऐसा नहीं है। उसके लिए सैकड़ों वर्ष से मेघखंड एकत्र हो रहे थे। फिर भी ऊपर-ऊपर से देखने पर लगता है कि उसका प्रादुर्भाव एकाएक हो गया।''

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **डॉ. बच्चन सिंह** भक्ति इसके मूल में आर्थिक पहलुओं को भी महत्ता प्रदान करते हैं। वे कहते हैं- ''श्रम विभाजन के फलस्वरूप नयी जातियों का जन्म हुआ। जाति-पाँति के बंधन को धक्का लगा। बाजारों पर निर्भर होने के कारण कारीगरों और सामंतों की संबंध श्रृंखला शिथिल हुई। उनके मन में आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता का भाव जगा। उन्होंने डंके की चोट पर कहा कि हम द्विजातियों से घटकर नहीं हैं। कबीर, रैदास, दादू आदि इसी व्यवसाय और जाति के लोग थे। इन्होंने वेद-कितेब (कुरान) को अस्वीकार करके हिंदुओं-मुसलमानों के लिए एक सामान्य मार्ग निकाला। इसके प्रभाव से सामंती जंजीरों में बंधा-घुटता, सिसकता, अपमान की आग में झुलसता निम्न वर्ग राहत की साँस लेने लगा।'' इस प्रकार भक्ति आंदोलन ने समाज के निम्न या वंचित वर्ग में आत्म विश्वास और जीवन में सरसता का संचार किया।

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **शहाबुद्दीन इराकी (मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन) लिखते हैं कि-** "इस अनोखे आंदोलन का कोई ऐतिहासिक संस्थापक नहीं है, तथापि यह माना जाता है कि उत्तर भारत में इसे परिचित और प्रचलित करने का श्रेय रामानंद (1400-70 ई.) को है। उनके साथ ही मध्यकालीन भारत के सामाजिक इतिहास में एक महान् क्रांति आई।"
- भक्ति का यह आंदोलन भले ही दक्षिण से आया हो किन्तु उत्तर तक आते-आते इसकी प्रखरता व मुखरता में अंतर आ गया।

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **विश्वनाथ त्रिपाठी का मानना है कि-** "उत्तरी भारत में भक्ति की विचारधारा या भक्ति का शास्त्र तो दक्षिण से आया किंतु उत्तर भारत में आकर वह दक्षिण जैसा शांत और स्निग्ध नहीं रह गया। उत्तर में वह खरा, आग्रही, अधिक विद्रोही एवं आक्रामक बना। इसके लिए केवल तुर्की शासन ही जिम्मेदार नहीं, इसके लिए नाथ-सिद्धों की आत्मविश्वासी और वर्णव्यवस्था का तीव्र विरोध करने वाली परम्परा जिम्मेदार है।"

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **डॉ. नामवर सिंह** ने भी यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि "मध्ययुग के भारतीय इतिहास का मुख्य अन्तर्विरोध शास्त्र और लोक के बीच का द्वंद्व है, न कि इस्लाम और हिंदू धर्म का संघर्ष।"
- **ग्रियर्सन का कहना है कि** ईसा की दूसरी-तीसरी शताब्दी में कुछ ईसाई मद्रास आकर बस गए थे जिनके प्रभाव से भक्ति का विकास हुआ।"

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **बाबू गुलाबराय** ने भक्ति आंदोलन को हारी हुई मनोवृत्ति का परिणाम बताया और इस मत की पक्षधरता करने वाले विद्वान वल्लभाचार्य की पंक्ति 'म्लेछाक्रांतेषु देशेषु' को आधार बनाते हैं। आचार्य वल्लभ जैसी ही कुछ चिंता गुरु नानक ने भी व्यक्त की थी किंतु इन्हीं चिंताओं को भक्ति आंदोलन के उदय का प्रधान कारण नहीं माना जा सकता।

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **डॉ. शिवकुमार शर्मा का मत है कि-** "हमें यह भी नहीं भूलना होगा कि भक्ति एक परमोच्च साधना का फल है जिसके लिए परम शांत वातावरण अनिवार्य है। इसके लिए संघर्षमय वातावरण अपेक्षित नहीं है और न ही यह हारी हुई मनोवृत्ति की उपज है। यदि ऐसा होता तो अंग्रेजी शासन की स्थापना के समय भी इसे प्रस्फुटित हो जाना चाहिए था। भक्ति जैसी शुद्ध निर्मल भावना का संबंध, शुद्धत:करण की पराकाष्ठाप्त सात्विकता पर अवलंबित है। इस परम स्पृहणीय भावना को तलवार के प्रहार या अन्य किसी बाह्य बलात्मक उपकरण से उद्भूत नहीं किया जा सकता है।"

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **डॉ. शिवकुमार शर्मा एक महत्त्वपूर्ण मत को वर्णित करते हैं-** ‘‘डॉ. सत्येन्द्र भक्ति का उद्भव द्रविड़ों से मानते हैं, दक्षिण के वैष्णव भक्तों से नहीं। वे लिखते हैं ‘भक्ति द्राविड़ी उपजी लाये रामानंद’ इस उक्ति के अनुसार भक्ति का आविर्भाव द्रविड़ों में हुआ। उक्ति कर्ता संभवत: यह नहीं जानता था कि वह इन शब्दों पर कितने गहरे सत्य को प्रकट कर रहा है। उसका द्रविड़ से अभिप्राय दक्षिण देश से ही था किंतु जैसा संकेत किया जा चुका है, नई प्रागैतिहासिक खोजों में यह सिद्ध-सा होता है कि भक्ति का मूल द्रविड़ों में है और दक्षिण के द्रविड़ों में ही नहीं, उनके महान पूर्वज मोहनजोदड़ों और हड़प्पा के द्रविड़ों में भी।’’

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **मुक्तिबोध** ने इसे वर्ग विद्रोह (उच्च वर्ग के खिलाफ निम्न वर्ग) के रूप में देखा। उनका मानना था कि इस काल में निम्न समझी जाने वाली जातियों का स्वर अधिक तीव्र था और समय के साथ इस आंदोलन की तीव्रता समाप्त होने के पीछे वे उच्च वर्गीय जातियों का मजबूत होना मानते हैं।

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- डॉ. शिवकुमार मिश्र का मत आचार्य शुक्ल के मत से जुड़ता है। वे कहते हैं- ''देश के विभिन्न धर्म मतों और साधना पद्धतियों के बीच सदियों से चले आ रहे आदान-प्रदान के फलस्वरूप भक्ति की जो लोक सामान्य आकृति निर्मित हुई, भक्ति की इस मंद-मंद चली आ रही धारा को यदि इस्लाम के आगमन अथवा उसके मजहबी आवेश से जन्मी प्रतिक्रिया ने नहीं उभारा तो फिर वह कौन-सा जीवित संस्पर्श था जिसने उसे उद्दाम वेग वाले एक उच्छल नद का रूप प्रदान करते हुए समूचे उत्तर भारत में, एक छोर से दूसरे छोर तक फैल जाने को प्रेरित किया।''

fppt.com

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

- **प्रो. रामजी तिवारी का मानना है कि-** ''विदेशी सत्ता से आतंकित, सामाजिक दृष्टि से विपर्यस्त, न्याय धर्म से वंचित, रूढ़ि एवं अंधविश्वास से ग्रस्त, शांति एवं व्यवस्था से विपन्न, आध्यात्मिक विषयों से विपथ, उदात्त मूल्यों से हीन, भविष्य के प्रति अनाश्वस्त, आत्मविश्वास विरहित भारतीय जनता में अस्मिता की पुनर्पहचान और आत्मविश्वास की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए भक्ति भागीरथी का आवाहन एकमात्र विकल्प था।''

fppt.com

निष्कर्ष

- अतः विभिन्न विद्वानों के मतों के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि भक्ति भारतीय प्राणधारा का मूल तत्व है जो कि परम्परा से ही भारतीय जीवन का हिस्सा रही है। पूर्व मध्यकाल तक आते-आते यह प्राणधारा अधिक वेगवान और बलवती हुई और ऐसा होने के पीछे विविध सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों ने अपनी महती भूमिका निभाई। भक्ति आंदोलन के उदय के कारणों में हमें किसी एक विशिष्ट कारण को आधार न बनाकर समेकित प्रभाव को स्वीकारना होगा।

fppt.com

धन्यवाद !